वनाथ

सामद्बलेतिच। जनोजतूकार जनोजनुक् स्क्रविनी॥ १५३॥ संस्पर्धाऽ वश्दोग न्धमू लीष द्यान्यिके त्यपि। कर्बुरोऽपिप लाशेऽ व वारवेह्नः कटिह्मकः ॥ १५४॥ खबवीचा यक् लकंप टालिक्तिकः प दः। नमागडनम् नर्नाम् विक्षाः नर्नटी सियो ॥ १५५॥ इक्षानः कटुनुबीस्थानुम्ब्यलानुस्भेसमे। चिनागवाध्नीगानुम्बाविशालात्विन्द्वा र्खो॥ १५६॥ अशिष्टः म्हरणः नदोगाडीर मुसमष्टिला। नलंब्यु वादिकास्त्रीतमूलकंहिलमाचिका ॥ १५७॥ वास्तुकंशाकभेदाःस्यर्द्वा गुश्तपिक्ता। सहस्रोर्धाभागव्यार् हाननाऽ यसासिता॥ १५८॥ गोले।मीश् नवीर्या चगराडालीश् मुला च्ह् कः। इत्विन्द्।मेघनामामु सामस्वमस्वियाम्॥ १५७॥ साइ इमस्वोगन्द्राच्यालाच काले। च्याः। वंश्रान्व क्सारकर्मार न्व चिसारतृ गाध्वजाः॥ १६०॥ श्रा तप बाय वफलोवेणुम स्तरते जनाः। वेगावः नी चकास्तीसुर्येस्व नन्यनिलोद्ध ताः॥ १६१॥ ग्रन्थिनी पर्वीगन्द्रसी जनकःशरः। नउस्तिम नःपाटगलाऽ वकाश्मिख्याम्॥ १६२॥ इक्ष्यान्यापाटगलःपंसि भूमिनवल्वजाः। रसालइक्षुस्तद्भेदाःपुंड्कांतारकाद्यः॥१६३॥ स्यादीर्गावीर तरंमूले ऽस्थाशीर मिस्वयाम्। अभयंन लदंसे व्यम मृगा लंजानाश्यम्॥ १६४॥ लामञ्जानं ल घुलयम बदाहेष्टकापथे। न लाद यस्त गंगभश्यामा न प्रमुखाअपि॥ १६५॥ अस्वीनशंन द्यार भःप